Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2023 SHISRRJ | Volume 6 | Issue 1 | ISSN : 2581- 6306

'मूड्स' या 'स्वभाव' के कवि : शमशेर बहादुर सिंह

डॉ0 भूपेन्द्र सिंह
सहायक प्राचार्य, हिन्दी,
अवध बिहारी संस्कृत महाविद्यालय, रहीमपुर, खगड़िया, बिहार,
(कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार)

Article Info
Publication Issue :
January-February-2023
Volume 6, Issue 1
Page Number : 131-135
Article History
Received : 01 Jan 2023
Published : 20 Jan 2023

शोधसारांश–शमशेर अपनी अभिव्यक्ति में निरन्तर एक स्तर बनाये रखते हैं और उस स्तर से कभी नीचे नहीं उतरते। यही नहीं, वे अपने पाठक को ही उस स्तर तक उठाना चाहते हैं। अपनी इस चेष्टा में वे पूरी ईमानदारी निभाते हैं। उनकी कविताएँ प्रबुद्ध पाठकों की माँग करती है। सरसती तौर पर चढ़ कर न तो उन्हें समझा जा सकता है और न उसका स्वाद लिया जा सकता है। जॉन वेन ने नयी कविता को समझने के लिए यह आवश्यक माना है कि उन्हें समझदारी से, सहानुभूति से और समय देकर धीरे–धीरे पढ़ा जाय। शमशेर की कविताओं को समझने के लिए पाठक को इन तीनों बातों का ध्यान रखना पड़ेगा। नये कवियों में सबसे अधिक कवि सम्भवतः शमशेर ही हैं। अपनी गहरी संवेदना और व्यापक एवं सारपूर्ण प्रयोगशीलता के कारण वे प्रगति और प्रयोग में एक स्वस्थ सन्तुलन स्थापित कर सके हैं।

मुख्य शब्द–मूड्स, स्वभाव, कवि, शमशेर बहादुर सिंह, कविता, प्रबुद्ध,पाठक, सहानुभूति।

शमशेर बहादुर सिंह मूलतः प्रयोगवादी कवि हैं। उनकी प्रारंभिक कविताएँ मार्क्स–दर्शन से प्रभावित हैं। प्रारंभ में उनका विचार प्रगतिवादी और शिल्प रूपवादी था। शमशेर को 'व्याकुल शान्ति' का कवि कहा गया है। क्योंकि वे वैचारिक स्तर पर दिशा का ज्ञान रखते हैं किन्तु उनकी कविता में कोई दिशा–संकेत प्राप्त नहीं होता। यही नहीं, उनकी कविता में आद्यन्त किसी एक निश्चित–पद्धति को खोज निकालना भी कठिन है। मलयज ने उनके संबंध में ठीक ही लिखा है कि ''वे 'मूड्स' के कवि हैं किसी 'विजन' के नहीं।''[1] किन्तु उनका 'मूड भ्रान्त अथवा अनुत्तरदायी व्यक्ति का मूड' नहीं है। उनके मूड को हम ऐसे व्यक्ति का 'मूड' कह सकते हैं जो आज के कटु यथार्थ को देखता ही नहीं, उसे जीवन में झेलता भी है। उनकी संवेदना जीवन–यथार्थ से सम्पृक्त है।[2]

शमशेर बहादुर सिंह कला की सचाई को जानते हैं, उसमें छिपी हुई संवेदनाओं को पूरी जीवन्तता के साथ महसूस करते हैं, उन्हें जीवन के यथार्थ बोध का गहरा भान है। इसलिए वे कहते हैं कि ''कला कैलेण्डर की चीज नहीं है। वह कलाकार की अपनी बहुत निजी चीज है। जितनी ही अधिक वह उसकी अपनी निजी है, उतनी ही कालान्तर में वह औरों की भी हो सकती है।''[3] उनकी कविताओं में यह सचाई और कला की निजता सर्वत्र विद्यमान है। वे किसी विशेष पल को, किसी खास स्वभाव को या फिर किसी से प्रभावित होकर अपनी कविता को एक रूप देते हैं। उनमें आत्मीयता और निजता अधिक है। बाह्य यथार्थ उनकी कविता में स्वभाव बनकर व्यक्त होता है। उनमें वह हलचल नहीं मिलती जो कहीं निराला में दिखलायी पड़ती है और न वह विक्षोभ जो नये कवियों को व्याकुल किये रहता है। शमशेर की कविता में नींद और मौन शब्द का प्रयोग बार–बार हुआ है। ये दोनों ही शब्द कवि के शांत, स्थिर मनः स्थिति को व्यक्त करते हैं।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

साथ, सम, शांत;
स्वप्न–सी, सुन्दर;
सिर्फ दो ममियाँ।
वीतराग जीवन में गहरी
भूलों की
अधर–पंखुड़ियों–सी,
मौन, सुप्त।
सिर्फ दो ममियाँ।
हम, तुम।[4]

शमशेर की शमशेरियत को लेकर 'नामवर सिंह' ने लिखा है कि ''शमशेर की आत्मा ने अपनी अभिव्यक्ति का जो एक प्रभावशाली भवन अपने हाथों तैयार किया है, उसमें जाने से मुक्तिबोध को भी डर लगता था–'उसकी गम्भीर प्रयत्नसाध्य पवित्रता के कारण।'.....यह पवित्रता किसी मन्दिर की नहीं है। यह कोई और भवन नहीं, आत्मा की अभिव्यक्ति का भवन है। कवि की कार्यशाला। अपना घर। बड़े जतन से बनाया हुआ। अपनी हड्डियाँ गलाकर। अपना खून जलाकर। 'ओ मेरे घर' शीर्षक कविता का घर। जिसने 'इंसान के अँखौटे में डालकर मुझे/सबकुछ तो दे दिया/जब मुझे मेरे कवि का बीज दिया कटु–तिक्त।' कितना अलग है यह घर शमशेर का! सबसे।

वह 'आलिशान गुम्बद' बाहर से ही दिख जाता है जिसमें बकौल मलयज ''सिर्फ एक व्यक्ति की आवाज़ गूँजती रहती है।'' वह आवाज शमशेर की है। बाहर से भी साफ सुनी जा सकती है। इसलिए नहीं कि ऊँची है। इसलिए कि गूँजती है–मद्धिम होने के बावजूद। कभी–कभी एकदम खामोश भी। यह किसी पुजारी की प्रार्थना नहीं। कवि का एकालाप है। शमशेर की प्रायः सभी कविताएँ एकालाप हैं–आन्तरिक एकालाप। बह रहा हूँ जुनूँ में क्या कुछ/कुछ न समझे ख़ुदा करे कोई' के अन्दाज़ में।''[5]

तब छंदों के तार खिंचे–खिंचे थे,
राग बँधा–बँधा था,
प्यास उँगलियों में विकल थी–
कि मेघ गरजे;
और मोर दूर और कई दिशाओं से
बोलने लगे– –पीयूअ्! पीयूअ्! उनकी
हीरे–नीलम की गर्दनें बिजलियों की तरह
हरियाली के आगे चमक रही थीं।[6]

शमशेर अनुभव–जगत की अतल गहराई में प्रवेश करते हैं और भीतर एकदम भीतर अधिक गहरे उसमें उतरते जाते हैं। उस अनुभव को शुद्ध करते हैं, उसे सघन बनाते हैं और उसे अपने अस्तित्व के साथ सिद्दत से महसूस करते हैं। परिणाम यह होता है कि उनकी भाषा, उनके शब्द, उनका शिल्प–छन्द, लय, बिम्ब, प्रतीक आदि नये हो जाते हैं–

प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसे
भोर का नभ
राख से लीपा हुआ चौका
(अभी गीला पड़ा है)
बहुत काली सिल ज़रा से लाल केसर से
कि जैसे धुल गई हो
स्लेट पर या लाल खड़िया चाक

मल दी हो किसी ने।[7]

शमशेर में नये प्रयोग बहुत हैं। यह 'नयापन' अनुभूति की निजता से उत्पन्न होता है। 'नयापन' सामान्यीकरण नहीं होता। इसीलिए शमशेर की कविता में सामान्यीकरण नहीं है। उसमें अमूर्तन है वह मौलिकता और विशिष्टता लिये है। कवि बाह्य संसार की उलझनों को–यथार्थबोध को, अपनी विशिष्ट और सूक्ष्म अनुभूत के बिम्बों में ढालता है। शमशेर की कविता में यह कला परिष्कार रेखांकित करने योग्य है। रूपतन्त्र या अभिव्यक्तिशिल्प के प्रति जितने सतर्क वे हैं उतने कम ही कवि होते हैं।

शमशेर की काव्य क्षमता, उनका जीवन–संघर्ष, उनके शिल्प विधान को देखकर ही 'मुक्तिबोध' ने लिखा है कि ''कहना न होगा कि शिल्प की दृष्टि से शमशेर हिन्दी के एक अद्वितीय कवि हैं। अपने स्वयं के शिल्प का विकास केवल वही कवि कर सकता है, जिसके पास अपने निज का कोई ऐसा मौलिक विशेष हो, जो यह चाहता हो कि उसकी अभिव्यक्ति उसी के मनस्तत्त्वों के आकार की, उन्हीं मनस्तत्त्वों के रंग की, उन्हीं के स्पर्श और गन्ध की ही हो। और गन्ध की ही हो। दूसरे शब्दों में, अभिव्यक्ति के लिए आतुर हो उठने वाला मौलिक–विशेष आत्मचेतस् भी होना चाहिए।''[8]

ये लहरें घेर लेती हैं
ये लहरें.....
उभरकर अर्द्ध द्वितीया
टूट जाता है.....
अंतरिक्ष में
ठहरा एक
दीर्घ समतल मौन।[9]

शमशेर के संदर्भ में बच्चन सिंह ने लिखा है कि ''उनकी कविताएँ मानसिक जटिलता की कविताएँ हैं। वे भीतर, और भीतर घुसते जाते हैं, यहाँ तक कि अचेतन मन की सीमाओं में भी प्रवेश कर जाते हैं। इसलिए रचनाओं की संघटना 'सुर्रियलिस्ट' हो जाती है। वे त्रिलोचन की तरह सब कुछ कह देने और पूरा वाक्य लिखने के पक्ष में नहीं हैं। वे बिंबों को, शब्दों को अनायास बिखेर देते हैं। इस बिखराव को वे विराम, अर्द्धविराम, डैश, डाट से नियन्त्रित करने की चेष्टा करते हैं। बिखरे हुए बिंबों, प्रतीकों, शब्दों के अन्तराल में अन्तर्निहित अर्थों को उद्घाटित करने का बहुत सारा काम पाठकों के विवेक पर छूटा रहता है। दूसरे शब्दों में पाठकों को सचेत भाव से कविता की पुनः सर्जना में लीन होना पड़ता है। पर अक्सर बिंब खंडित और कभी–कभी अबूझ हो जाते हैं। ऐसा उस समय होता है जब कवि अपने अन्तश्चेतनात्मक बिंबों को सामाजिकता पर प्रक्षेपित करता है।[10]

सींग और नाख़ून
लोहे के बख़्तर कंधों पर।
सीने में सूराख़ हड्डी का।
आँखों में : घास–काई की नमी।
एक मुर्दा हाथ
पाँव पर टिका
उलटी कलम थामे।
तीन तसलों में कमर का घाव सड़ चुका है।[11]

कहीं–कहीं शब्द अधिक सूक्ष्म होकर ध्वनि की तरह तैरने लगते हैं। उनमें एक लोच आ जाती है। उनका असर संगीत की तरह सूक्ष्म हो जाता है। यह अनुभूति को अधिक तराशने और निजी बनाने के कारण उनकी कविता दुरूहता का भी शिकार होती है जिसका आरोप उनकी कविता पर लगाया गया

है। यह आरोप एक हद तक ठीक है। यद्यपि कहीं–कहीं बयानबाजी भी मिलती है फिर भी शमशेर का काव्य सपाटबयानी या कथन का काव्य नहीं है। वह बिंबों का काव्य है–

बात बोलेगी,
हम नहीं।
भेद खोलेगी
बात ही।
सत्य का मुख
झूठ की आँखें
क्या–देखें![12]

शमशेर की चेतना मूलतः एक चित्रकार की चेतना है। इस संदर्भ में मुक्तिबोध ने लिखा है कि ''शमशेर की मूल मनोवृत्ति एक इम्प्रेशनिस्टिक चित्रकार की है। इम्प्रेशनिस्टिक चित्रकार अपने चित्र में केवल उन अंशों को स्थान देगा जो उसके संवेदना–ज्ञान की दृष्टि से, प्रभावपूर्ण संकेत–शक्ति रखते हैं। वह दृश्य–चित्र में उन्हीं अंशों को स्थान देता है, कि जो उसके संवेदना–ज्ञान की दृष्टि से उस दृश्य के अत्यन्त महत्त्वपूर्ण, अंतः प्रगाढ़, प्रभावपूर्ण अंग हैं।''[13]

शमशेर के चित्रण का मुख्य विषय सौंदर्य है। उन्होंने प्रकृति और मानवीय सौंदर्य को अपने भीतर बहुत घुलाया है। बादल, पहाड़ और आसमान उनकी कविता में प्रायः आते हैं–

पूरा आसमान का आसमान है
एक इंद्रधनुषी ताल
नीला साँवला हलका–गुलाबी
बादलों का धुला
पीला धुआँ...
मेरा कक्ष, दीवारें, किताबें, मैं, सभी
इस रंग में डूबे हुए–से
मौन।[14]

शमशेर के प्रेम सौन्दर्य को देखकर नामवर सिंह कहते हैं कि ''विचित्र बात यह है कि उम्र के साथ कवि में प्रेम की यह तीव्रता, पार्थिवता बढ़ती गई है और चढ़ता गया है सघन ऐन्द्रियता का ज्वार। साठ की उम्र के बाद शमशेर ने ज्यादा अच्छी प्रेम–कविताएँ लिखी हैं। कुछ और तरह की भी अच्छी कविताएँ। अंग्रेजी–कवि विलियम बटलर येट्स की तरह। अपने ही कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर की तरह। काल पर कला की विजय का एक और प्रमाण नहीं है यह क्या?''[15]

शाम का बहता हुआ दरिया कहाँ ठहरा!
साँवली पलकें नशीली नींद में जैसे झुकें
चाँदनी से भरी भारी बदलियाँ हैं,
ख़ाब में गीत पेंग लेते हैं
प्रेम की गुइयाँ झुलाती हैं उन्हें :
–उस तरह का गीत, वैसी नींद, वैसी शाम–सा है
वह सलोना जिस्म।[16]

शमशेर अपनी अभिव्यक्ति में निरन्तर एक स्तर बनाये रखते हैं और उस स्तर से कभी नीचे नहीं उतरते। यही नहीं, वे अपने पाठक को ही उस स्तर तक उठाना चाहते हैं। अपनी इस चेष्टा में वे पूरी ईमानदारी निभाते हैं। उनकी कविताएँ प्रबुद्ध पाठकों की माँग करती है। सरसती तौर पर चढ़ कर न तो उन्हें समझा जा सकता है और न उसका स्वाद लिया जा सकता है। जॉन वेन ने नयी कविता को समझने

के लिए यह आवश्यक माना है कि उन्हें समझदारी से, सहानुभूति से और समय देकर धीरे–धीरे पढ़ा जाय। शमशेर की कविताओं को समझने के लिए पाठक को इन तीनों बातों का ध्यान रखना पड़ेगा। नये कवियों में सबसे अधिक कवि सम्भवतः शमशेर ही हैं। अपनी गहरी संवेदना और व्यापक एवं सारपूर्ण प्रयोगशीलता के कारण वे प्रगति और प्रयोग में एक स्वस्थ सन्तुलन स्थापित कर सके हैं।[17]

सन्दर्भ सूची

1. लहर–कवितांक, जनवरी 1961, पृ0 07।
2. नयी कविता का समाजशास्त्र, डॉ0 मनोज कुमार सिंह, तथागत प्रकाशन, सारनाथ, वाराणसी, पृ0 70।
3. कुछ कविताएँ, शमशेर बहादुर सिंह, पृ0 64।
4. प्रतिनिधि कविताएँ, शमशेर बहादुर सिंह,संपा0 नामवर सिंह,राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,पृ0 19।
5. वही, पृ0 05।
6. वही, पृ0 59।
7. वही, पृ0 102।
8. शमशेर : मेरी दृष्टि में, मुक्तिबोध, मुक्तिबोध रचनावली, संपा0 नेमिचन्द्र जैन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0 432–433।
9. प्रतिनिधि कविताएँ, शमशेर बहादुर सिंह,संपा0 नामवर सिंह,राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,पृ0 40।
10. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, डॉ0 बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0 434।
11. प्रतिनिधि कविताएँ, शमशेर बहादुर सिंह, संपा0नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,पृ0 36।
12. वही, पृ0 43।
13. शमशेर : मेरी दृष्टि में, मुक्तिबोध, मुक्तिबोध रचनावली, संपा0 नेमिचन्द्र जैन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0 433।
14. प्रतिनिधि कविताएँ,शमशेर बहादुर सिंह,संपा0नामवर सिंह,राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली,पृ0 105।
15. वही, पृ0 08।
16. वही, पृ0 88।
17. नयी कविता का समाजशास्त्र,डॉ0 मनोज कुमार सिंह,तथागत प्रकाशन, सारनाथ, वाराणसी, पृ0 71–72